an>

Title: Regarding centenary of Champaran Movement in Bihar.

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण) : अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे चंपारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आज ही के दिन महात्मा गांधी ने खेवनहरराव जी के साथ लौकरिया और शिवराजपुर का दौरा किया था और उन्हें हमारे सतवरिया गांव के पश्चिम चंपारण जिले के साधारण किसान राजकुमार शुक्ला जी ने लखनऊ अधिवेशन में आमंत्रित किया था। हमारे जिले के किसानों की दुर्दशा सुनकर वह दुखी हुए। वह हमारे जिले आए थे और आज के दिन वह हजारीमल धर्मशाला में ठहरे थे। यहां किसानों पर जुल्म होता था, हर एकड़ में तीन कट्ठे की जमीन उन्हें जबरदस्ती नील उगानी पड़ती थी, जिसे औने-पौने दामों में अंग्रेज खरीदते थे और वे इंग्लैंड डाई इंडस्ट्रीज के लिए भेजते थे। इस कारण किसान अपना खाद्यान्न नहीं उगा पाते थे। इससे उन्होंने मुक्ति दिलाने के लिए पहला सत्याग्रह आंदोलन चलाया और मोहनदास करमचंद गांधी को महात्मा गांधी जी के नाम से चंपारण ने नवाजा। आज के दिन मैं इस चंपारण आंदोलन में महात्मा गांधी जी के साथ गये इस देश के प्रथम राष्ट्रपति, श्री राजेन्द्र प्रसाद जी को, ब्रिज किशोर प्रसाद जी, अनुग्रह नारायण सिंह, और आचार्य जे.बी.कृपलानी जी को श्रद्धांजलि देना चाहूंगा, जिन्हें गांधी के साथ मुजफ्फरपुर में केवल राति विश्राम करने के चलते 24 घंटे के भीतर अपना निवास खाली करना पड़ा और उनका सारा सामान फेंक दिया गया। मैं आज मजहरूल हक जी और मेरे जिले के माननीय राजकुमार शुक्ला जी, प्रजापति मिश्रा जी, गुलाली चंद गुप्ता जी, रामनौमी प्रसाद जी, पीर मौहम्मद मुनीस जी को श्रद्धांजलि देना चाहूंगा कि जिन्होंने गांधी जी के साथ मिलकर इस आंदोलन को चलाया और यह देश की आजादी का सबसे प्रथम सिम्नेचर बनकर आया।

इसके साथ ही मैं बताना चाहूंगा कि इस बात को आज सौ साल हो गये हैं, लेकिन चंपारण उस समय भी बहुत पिछड़ा हुआ जिला था और आज भी बहुत पिछड़ा जिला है। अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि जिस प्रकार वह सांसद आदर्श ग्राम योजना चला रही है, उसी तरह से चंपारण जिले को स्वच्छता अभियान के तहत विशेष राशि दी जाए और चंपारण को एक आदर्श जिला घोषित किया जाए। इसके साथ ही मैं अनुरोध करूंगा कि इस शताब्दी वर्ष के यादगार के रूप में महात्मा एक्सप्रैस एक ट्रेन चंपारण से दिल्ली के लिए चलाई जाए।

अध्यक्ष महोदया, अंत में मेरा आपसे अनुरोध है कि यह धर्मशाला वह स्थान है, जहां महात्मां गांधी जी सबसे ज्यादा दिन रुके थे और धर्मशाला किसी व्यक्ति की निजी सम्पति नहीं है। इसलिए आप बिहार सरकार को पत्र लिखें कि इस धर्मशाला का जीर्णोद्धार कराया जाए। कुछ लोगों ने इसे कैप्चर करके रखा हुआ है। मैं समझता हूं कि राष्ट्रपिता को सच्ची श्रद्धांजलि वही होगी कि इस हजारीमल धर्मशाला को आजाद कराया जाए। मैं संसदीय कोष से पचास लाख रुपये देने मंजूर करता हूं, अगर बिहार सरकार इसे आजाद करा सके। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री पी.पी.चौधरी,

श्री सी.पी.जोशी,

कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

श्री सुनील कुमार सिंह,

श्री रोडमल नागर,

श्री सुधीर गुप्ता एवं

श्री अश्विनी कुमार चौबे को डा. संजय जायसवाल द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।